P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विकास में शिक्षा का योगदान

अरविन्द कुमार गहलौत
सीनियर रिसर्च फेलो,
समाजशास्त्र विभाग,
एस. आर. टी. कैम्पस,
हे0न0ब0 गढ़वाल
विश्वविद्यालय,
केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांश

नैतिकता से हमारा तात्पर्य यह है कि प्रत्येक समूह में सामाजिक व्यवहार के कुछ नियम पाये जाते हैं। जिनका इसके सदस्यों द्वारा पालन किया जाता है अथवा किया जाना चाहिए अच्छे या बुरे से संबंधित उन नियमों को जिनका बोध हमारी आत्मा द्वारा कराया जाता है उसे नैतिकता कहते हैं। धर्म एवं नैतिकता का घनिष्ठ सम्बन्ध है जो कुछ अच्छा है वह ईश्वर की इच्छा है। अतः ईश्वर की इच्छा की पूर्ति एवं नैतिक कार्यों का पालन एक ही प्रक्रिया के दो स्वरूप हैं धर्म एवं नैतिकता दोनों मानव आचरण को नियंत्रित करते हैं। शिक्षा का तात्पर्य वर्तमान जीवन को सुखी बनाने के लिए साधन की सामग्री जुटाना नहीं है वरन मानसिक शान्ति एंव आत्मा के सर्वोत्तम गुणों को विकसित करना, सद्गुणों, अच्छे नैतिक चरित्र का विकास करना ही शिक्षा है। नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए धर्म शिक्षा समिति, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, धर्म एवं नैतिक शिक्षा समिति एवं कोठारी शिक्षा आयोग ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मुख्य शब्द : नैतिकता, आध्यात्मिकता, शिक्षा।

प्रस्तावना

आज कल धर्म और शिक्षा के सम्बन्ध की बात करते ही धर्म से सम्बंधित दो अन्य महत्वपूर्ण प्रसंग धर्मनिरपेक्षता तथा नैतिकता परिचर्चा के विषय बन जाते हैं। इन प्रसंगों में न केवल धर्मशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों अपितु शिक्षा–शास्त्रियों तथा विद्यार्थियों के संरक्षकों का ध्यान समय–समय पर आकर्षित किया है। नैतिकता से हमारा तात्पर्य यह है कि प्रत्येक समूह में सामाजिक व्यवहार के कुछ नियम पाये जाते हैं। जिनका इसके सदस्यों द्वारा पालन किया जाता है अथवा किया जाना चाहिए अच्छे या बुरे से संबंधित उन नियमों को जिनका बोध हमारी आत्मा द्वारा कराया जाता है उसे नैतिकता कहते हैं। इन नियमों को समुदाय मान्यता प्रदान करता है। ईमानदारी, वफादारी, सत्यता, नेकी आदि कुछ नैतिक अवधारणा है। जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति नैतिक रूप से अच्छा है तो हमारा अभिप्राय यही होता है कि यह विश्वास योग्य, ईमानदार, वफादार एवं नेक है।

धर्म एवं नैतिकता का घनिष्ठ सम्बन्ध है जो कुछ अच्छा है वह ईश्वर की इच्छा है। अतः ईश्वर की इच्छा की पूर्ति एवं नैतिक कार्यों का पालन एक ही प्रक्रिया के दो स्वरूप हैं धर्म एवं नैतिकता दोनों मानव आचरण को नियंत्रित करते हैं। मैथ्यू अर्नाल्ड के शब्दों में "धर्म भावना से मिश्रित नैतिकता है"। वेंजामिन किड एवं अन्य लेखकों का विचार है कि धर्म एंव नैतिकता सहगामी तथा धर्म के अवलम्ब के बिना नैतिकता का कोई आधार नहीं है। एफ.एच. ब्रेडले के शब्दों में धार्मिक बनना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

अमेरिकी सामाजिक दार्शनिक थियोडोर ब्रेमाल्ड के अनुसार धार्मिक शिक्षा को समझने के लिए हमें दार्शनिक विचार धाराओं के दो पक्ष समझने होगें–

प्रथम – अनिवार्यवाद और निरन्तरवाद

द्वितीय – प्रगतिवाद और पुर्नरचनावाद

प्रथम विचारधारा के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य ईश्वर को समझना व पूजना है, अतः उनके अनुसार नैतिक नियम का सोत्र मनुष्य न होकर ईश्वर होता है। द्वितीय विचारधारा मानवतावाद पर बल देती है। मनुष्य ही नैतिक नियमों का स्रोत माना जाता है। ब्रेनाल्ड यथार्थवादी मानववादी में विश्वास करते हैं, अतः वे नैतिक शिक्षा को मानवीय गुणों का विकास करने वाला मानते हैं। अमेरिकी दार्शनिक एन.एन. वाइट हैड के अनुसार "शिक्षा का मूल तत्व ही यह है

कि वह धार्मिक है, धार्मिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो कर्तव्य और श्रद्धा सिखलाती है।"

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को मनुष्य की अन्तनिर्हित शक्तियों का पूर्णता की अभिव्यक्ति बताया है। शिक्षा का तात्पर्य वर्तमान जीवन को सुखी बनाने के लिए साधन की सामग्री जुटाना नहीं है वरन मानसिक शान्ति एंव आत्मा के सर्वोत्तम गुणों को विकसित करना, सद्‌गुणों, अच्छे नैतिक चरित्र का विकास करना ही शिक्षा है।

धर्म के प्रमुख तीन पक्ष होते है :–

(1) नैतिकता (2) बाह्यचार (3) आध्यात्मिकता

नैतिकता को अपने आधार के लिए धर्म की आवश्यकता है चाहें वह आध्यात्मिक धर्म हो या सामाजिक धर्म चूंकि व्यक्ति के उचित या अनुचित का निर्धारण धर्म ही करता है साथ ही धर्म के सिद्धान्तों के अनुपालन को हम नैतिक के रूप में देखते है। धर्म का सम्बन्ध व्यक्ति की भावनाओं व संवेगो से होता है और व्यक्ति की क्रियाएं भी उन्हीं के द्वारा संचालित होती हैं जबकि नैतिकता में व्यक्ति जब उचित और अनुचित की बात करता है तो वह तर्क से कार्य करता है इसी कारण नैतिकता का स्पष्ट मस्तिष्क से होता है। नैतिक मूल्यों का विकास धार्मिक विश्वासों से होता है। धर्म एक आन्तरिक व्यवहार है जबकि नैतिकता एकब्राह व्यवहार है। नैतिकता में व्यक्ति जिस आचरण को अपनाता है उसके द्वारा वह समाज की स्वीकृति व प्रशंसा प्राप्त करना चाहता है जबकि धर्म में व्यक्ति जिन भी व्यवहार को अपनाता है वह उसके मन को शान्ति देते है या उसे आध्यात्मिक या परालौकिक अहम को स्पष्ट करते है।

रायवर्न के अनुसार–''नैतिकता को धर्म से ही स्वीकृति प्राप्त होती है नैतिक बल का स्रोत धर्म है। धर्म से सम्बन्धित किये बिना नैतिकता की शिक्षा देना असम्भव है। धर्म ही नैतिकता में प्राण फूँकता हैं।''

बारटोल के अनुसार "कुछ लोग नैतिकता को धर्म से अलग करना चाहते है पर धर्म के बिना नैतिकता का अन्त हो जायेगा।"

अध्ययन के उद्‌देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास में शिक्षा का योगदान का अध्ययन करना।

नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विकास में शिक्षा का योगदान

1. नैतिक शिक्षा बालक को उचित–अनुचित, सही गलत व अच्छे व बुरे का ज्ञान कराती है, जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बालक के चरित्र का विकास हो जाता है। अच्छे चरित्र के मूल में धर्म व नैतिकता का निवास है। भारतीय संस्कृति ने प्रारम्भ से ही इस विचार पर बल देती है कि व्यक्ति का चरित्र ही उसकी सफलता एवं खुशी की कुंजी है और चरित्र के उपयुक्त विकास में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। किसी विद्वान ने चरित्र के महत्व के सम्बन्ध में कहा है–
   If wealth is lost nothing is lost
   If health is lost something is lost
   If character is lost everything is lost
   चरित्र ही वह गुण है, जो मानव को सही रास्ते पर चलाता है और माध्यमिक शिक्षा आयोग ठीक ही कहा है ''चरित्र के विकास में धार्मिक और नैतिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदन देती है।
2. आदर्शवादी विचारधारा के अनुसार चरित्र के उचित विकास के लिए बालक में सत्यम्, शिवम् व सुन्दरम् का विकास किया जाना चाहिए। हम कोई भी गुण निर्धारित कर सकते है, परन्तु इन गुणों के विकास के लिए हमें नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।
3. भारतवर्ष में इस समय मूल्य हनन या चरित्र हनन की ज्वलन्त समस्या है और बहुत सारे विद्वानो का यह मानना है कि यह समस्या इस कारण उत्पन्न हो रही है क्योंकि स्वतंत्रता के पश्चात् जब हमने स्वयं को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया तो पाठ्‌यक्रम में से धार्मिक शिक्षा के साथ ही साथ नैतिकता की शिक्षा को भी अलग कर दिया, जिससे छात्रों के समक्ष उचित एवं अनुचित का कोई मापदण्ड नहीं रहा। इस कारण हमारे लिये यह जरूरी हो गया है कि यदि हम छात्रों को सही मार्ग पर चलाना चाहते व मूल्यों का पतन रोकना चाहते है तो हमें नैतिक शिक्षा को पाठ्‌यक्रम में शामिल करना होगा।
4. नैतिक शिक्षा हमें संवेगो व भावनाओं पर नियंत्रण करना सिखाती है और इस कारण यह शिक्षा बालक की तर्क, चिन्तन, निर्णय शक्ति का विकास करती हैं। अच्छे एवं बुरे के मध्य बालक जब अन्तर करना सीख जाता है तो वह अपने व्यवहार सम्बन्धित निर्णय ही ले सकता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि नैतिक शिक्षा व्यक्तिगत दृष्टिकोण के स्थान पर वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण को स्थापित करने में सहयोग देती है।
5. नैतिक शिक्षा से बालक समाज के लिए एक उपयोगी नागरिक के रूप में विकसित होता हैं। एक उपयोगी नागरिक जिस प्रकार से अपनी चिन्ता न करके समाज की अधिक चिन्ता करता है। वह उसके कल्याण एवं विकास की बात सदैव सोचता है। उसी रूप में नैतिक शिक्षा उसे ढालने का प्रयास करती है।
6. आज की शिक्षा व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष यह है कि छात्रों को उचित दिशा दे सकने में असमर्थ हैं। शिक्षा आयोग के अनुसार "विद्यालय पाठ्‌यक्रम का एक गम्भीर दोष है– सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा व्यवस्था की अनुपस्थिति " पाठ्‌यक्रम के इस दोष को हम पाठ्‌यक्रम में नैतिक शिक्षा एवं धार्मिक मूल्यों के शिक्षा को उपयुक्त स्थान देकर दूर कर सकते हैं।
7. नैतिक शिक्षा व्यक्ति को स्वार्थ की भावना से ऊपर उठाती है। यह व्यक्ति में मै के स्थान पर हम की भावना की सृजन करती है। व्यक्ति में सहयोग, समाजसेवा, मानव सेवा आदि भावनाओं को हम नैतिक शिक्षा के द्वारा उत्पन्न करते है।
8. सभी शिक्षाविदों की यह मान्यता है कि धर्म व नैतिकता की शिक्षा सभ्यता व संस्कृति का विकास करने व उसकी सुरक्षा करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। नैतिक शिक्षा को पाठ्‌यक्रम में अवश्य

शामिल किया जाना चाहिए। जेण्टाइल का कथन है "राष्ट्रीय संस्कृतियाँ मानव मस्तिष्क की उच्चतर आवश्यकताओं के प्रति इतनी सजग कभी नहीं थीं जितनी कि अब है। ये आवश्यकताएँ केवल सौन्दर्यात्मक और अमूर्त बौद्धिक आवश्यकताएँ ही नहीं है वरन नैतिक और धार्मिक भी हैं। जिस विद्यालय में नैतिक व धार्मिक शिक्षा का समावेश नहीं है वह विद्यालय निरर्थक है"।

9. नैतिक शिक्षा का उद्देश्य बालक को किसी विशेष धर्म की शिक्षा देना नही होता है वरन बालक के अन्दर उपयुक्त मूल्यों एवं आचरण को विकसित करना होता है। डॉ0 राधाकृष्णन शिक्षा आयोग ने भी डिग्री स्तर पर नैतिक व धार्मिक शिक्षा पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने की बात कही और इस बात पर बल दिया कि विश्वविद्यालय स्तर की तृतीय वर्ष में छात्रों को विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कराना चाहिए व उनमें समानता का ज्ञान छात्रों को कराया जाना चाहिए।
10. नैतिक शिक्षा अच्छे नागरिकों का निर्माण करती है जो देश के लिए वफादार हो देश से प्रेम करे व देश की एकता को बनाये रखे। अच्छे व बुरे का ज्ञान कराकर व उचित मूल्यों का विकास करके यह शिक्षा अच्छे नागरिकों का निर्माण करती है।

साहित्यावलोकन

चतुर्वेदी, अर्चना (2001) ने "विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन" विषय पर पीएच. डी. स्तरीय शोधकार्य किया।

इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि – विद्यालयों की शिक्षा और सम्पूर्ण वातावरण पर उनकी संस्कृति की छाप होती है। प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात हुआ है कि सरस्वती शिशु मंदिरों के छात्र–छात्राओं में सृजनात्मक योग्यता, नैतिक मूल्य और राष्ट्रीय चेतना सबसे अधिक पायी गई। पश्चिमी संस्कृति के विद्यालयों की छात्र–छात्राऐं नेतृत्व गुण के प्रथम सोपान पर थे पर वे सृजनात्मक योग्यता, नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना की दृष्टि से द्वितीय सोपान पर थे।

सिंह विशेष, कुमार (2006) ने "विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नैतिक मूल्यों का अध्ययन" शीर्षक पर स्वतन्त्र शोध कार्य किया। इन्होने अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि नैतिक मूल्यों के विकास में शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव नहीं पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि मूल्यों के विकास के लिए उत्तरदायी अन्य कारण भी है जो स्पष्ट रूप से प्रभाव डालते हैं।

शर्मा, अनूप (2013) ने "राजकीय एवं कस्तुरबा गांधी उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं में नैतिक मूल्यों, सृजनात्मकता एवं समायोजन पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन" विषय पर शोधकार्य किया।

इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि – राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं के नैतिक मूल्यों के प्राप्तांकों का प्रतिशत औसत स्तर पर उच्च पाया गया। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं में नैतिक मूल्य सामान्य स्तर के पाए गए। कस्तुरबा गांधी राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं में नैतिक मूल्य औसत स्तर के पाए गए।

वन्दना –2014 ने विद्यालय एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नैतिकतार्किकता एवं नैतिक मूल्य का अध्ययन किया और पाया कि पारिवारिक वातावरण का प्रभाव लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर अधिक होता है।

उपाध्याय, एस0आर0–2016 ने बुद्धि एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नैतिकतर्क का अध्ययन शोधकार्य में पाया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की नैतिकतर्क पारिवारिक वातावरण से अधिक प्रभावित हुई है।

नैतिक एवं धार्मिक से सम्बन्धित कुछ समितियां/आयोग एवं उनके सुझाव

धार्मिक शिक्षा समिति 1944–46

1. शिक्षा की प्रत्येक योजना में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को स्थान दिया जाये।
2. सब धर्मों के सामान्य नैतिक व आध्यात्मिक सिद्धान्त को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाये।
3. सब धर्मों की सम्मति से उनके सामान्य नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों का शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाये।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग– 1948

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग डॉ0 राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित हुआ। इसने नैतिक व धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किये जाने पर बल दिया। इस आयोग ने निम्न सुझाव दिये–

1ण (1) प्रत्येक विद्यालय अपने शैक्षणिक कार्य का प्रारम्भ प्रार्थना सभाओं से करे जिससे कुछ मिनट का मौन रखा जाये।

2ण (2) डिग्री कोर्स के प्रथम वर्ष में छात्रों को महात्मा बुद्ध, कबीर, नानक, ईसा मसीह, सुकरात, महात्मा गाँधी आदि महान धार्मिक नेताओं की जीवनियाँ पढाई जाये।

3ण (3) द्वितीय वर्ष में धार्मिक ग्रन्थों में से सार्वभौमिक महत्व के चुने हुए भागों को पढ़ाया जाय।

4ण (4) द्वितीय वर्ष में धर्म दर्शन की मुख्य समस्याओं का अध्ययन कराया जाय।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा समिति

यह समिति श्री प्रकाश जी के अध्यक्षता में 1959 में गठित हुई व इसकी रिपोर्ट जनवरी 1960 में आयी जो निम्न सुझाव दिये–

सामान्य सुझाव

1. शिक्षा के प्रत्येक कार्यक्रम में परिवार को उचित स्थान दिया जाये तथा उसके दोषों का उन्मूलन किया जाये।
2. राधाकृष्णन आयोग के विचारों का क्रियान्वयन तथा ईश–विनय से विद्यालय का प्रारम्भ हो।
3. प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे ग्रन्थ रखे जाये जो प्रत्येक धर्म के मूल सिद्धान्त को बतायें।

प्राथमिक स्तर

1. प्रातःकाल स्कूलों में समूह गान हो।
2. धार्मिक नेताओं व धर्म प्रवर्तकों की जीवनियों का ज्ञान कराना।
3. "कार्य ही पूजा है" यह बताते हुए छात्रों में सेवाभाव को प्रोत्साहन देना।
4. खेल एवं शारीरिक क्रियाओं द्वारा चरित्र निर्माण करना।

माध्यमिक स्तर

1. प्रातः काल प्रार्थना सभा हो जिसमें दो मिनट का मौन रखा जायें।
2. संसार के प्रमुख धर्मों के सिद्धान्तों का ज्ञान कराया जाये।
3. छात्रों के मूल्यांकन करते समय उनके चरित्र व व्यवहार को ध्यान रखा जायें।
4. प्रत्येक सप्ताह एक घण्टा नैतिक शिक्षा का हो जिसमें छात्रों में वाद–विवाद की क्षमता को विकसित किया जायें।
5. विद्यालय में कभी–कभी कुछ ऐसे वक्ता आमंत्रित किये जाये जो नैतिक व सामाजिक मूल्यों पर भाषण दें।

विश्वविद्यालय स्तर

1. विभिन्न धर्मों के सामान्य सिद्धान्तों को पाठ्यक्रम में रखा जायें।
2. धार्मिक शिक्षा डिग्री कक्षाओं के प्रथम दो वर्षो में दी जाये।
3. विभिन्न धर्मो का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाये।
4. छात्रों को समाज सेवा का अधिक से अधिक अवसर दिया जाये जिससे उन्हें नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को सिखाया जायें व उनका व्यवहारिक अभ्यास कराया जाये।

कोठारी शिक्षा आयोग– 1964–66

सन् 1964 में डॉ0 डी0एस0 कोठारी की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग गठित हुआ व इसका प्रथम रिपोर्ट 1966 में प्रकाशित हुई। इस आयोग का विचार था कि आज के युग में आधुनिकीकरण का अभिप्राय यह समझता है कि नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को छोड़ दिया जाये व आत्म अनुशासन के बन्धनों को तोड़ दिया जाये। आधुनिकीकरण को हमें नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के उपर आधारित करना चाहिए। इन मूल्यों के अभाव में आज का युवक सामाजिक व नैतिक संघर्षो से गुजर रहा है। इस कारण आज हमें मूल्य परख शैक्षिक व्यवस्था की आवश्यकता है।

आयोग के सुझाव

1. केन्द्र एवं राज्य सरकार का यह प्रयास होना चाहिए कि वह अपने अधीन जो भी शैक्षिक संस्थाएँ है उनमें नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा को अनिवार्य बनाये।
2. निजी शिक्षण संस्थायें भी इसका पालन करें।
3. विभिन्न धर्मो से सम्बन्धित अध्यापक कक्षाओं में पढ़ाये।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जहाँ अनेक धर्मो के अनुयायी है किसी विशेष धर्म की शिक्षा नही दे सकता और न ही उसे ऐसा करना चाहिए परन्तु बहुमुखी धर्म वाले प्रजातंत्र राज्य के लिए यह भी आवश्यक है कि वह अपने नागरिकों में धार्मिक सहनशीलता को उत्पन्न करे और आज भी दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति यह है कि हमें धर्म के नाम को लेना भी पाप समझा जाता है। इस कारण आज का छात्र धर्म से दूर अपना विकास कर रहा है। जिसका भयंकर परिणाम यह हो रहा है कि दूसरों के धर्म को समझना तो दूर वह अपने धर्म से भी अनभिज्ञ है और उसका व्यवहार मूल्यविहीन होता जा रहा है। इस कारण हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है। जो छात्रों में धार्मिक कट्टरता उत्पन्न न करके यह क्षमता उत्पन्न करे कि वह विभिन्न धर्मो में समानता देख सके व उनके अन्दर अच्छे गुणों को उत्पन्न किया जा सकें ।

कोठारी शिक्षा आयोग ने सही कहा है– "शिक्षा का उद्देश्य है मानव के व्यवहार का उन्नयन कुछ मूल्यों के परिपेक्ष में करना। धर्म, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्य बताता है साथ ही यह संसार, मानव व ईश्वर के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सत्य का अध्ययन कराता है।"

आज हम विनाश के उस कगार पर खड़े हैं, जहाँ से कुछ भी बचने वाला नहीं है। विश्व में सांस्कृतिक सामाजिक संघर्ष उत्पन्न हो गया है प्रत्येक व्यक्ति अशांत है और अशांति का मुख्य कारण मानव मूल्यों का पतन होना है। पतन की इस प्रक्रिया पर केवल एक प्रकार से विजय प्राप्त की जा सकती है वह है शिक्षा की प्रक्रिया में धार्मिक, नैतिक एवं अध्यात्मिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *पाठक, आर.पी., (1995) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिपेक्ष, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 नई दिल्ली।*
2. *रूहेला, सत्यपाल (2012) भारतीय शिक्षा समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।*
3. *विद्याभूषण, सचदेव डी.आर. (2002) समाजशास्त्र के सिद्धान्त, किताब महल डिस्ट्रीव्यूटर्स, दरियागंज, नई दिल्ली।*
4. *डॉ0 सिंह, ओ.पी. (2008) शिक्षा का दार्शनिक आधार, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।*
5. *ओड़, एल.के. (1999) शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय भूमिका, मैकमिलन नई दिल्ली।*
6. *मोदी, विकास –नैतिक मूल्य और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
7. *डांगर, बी. एच. (1988) मूल्य शिक्षा, चड़ीगढ़, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
8. *पाठक, ओ. पी. (2011), प्राचीन भारतीय शिक्षा, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।*